वर्ष :: 32 अंक : 49
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

मिथिला
वर्णन
स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता

/mithilavarnan

झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

बोकारो :: रविवार, 11 सितंबर, 2022 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका

अवश्य पढ़ें
निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मैनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

5 दशक के गौरवशाली इतिहास का साक्षी बनीं सेल अध्यक्ष सोमा

बीएसएल के प्रदर्शन व भावी योजनाओं की ले गईं जानकारी, बेहतरी को ले दिए कई निर्देश

संवाददाता

बोकारो : सेल (भारतीय इस्पात प्राधिकरण लिमिटेड) की अध्यक्ष सोमा मंडल बोकारो स्टील प्लांट के कोक अवन विभाग में पिछले पांच दशक के एक गौरवशाली इतिहास का साक्षी बनीं। पिछले दिनों बोकारो में अपने दोदिवसीय दौरे के क्रम में श्रीमती मंडल ने संयंत्र दौरे के क्रम में सबसे पहले कोक ओवन विभाग का दौरा किया, जिसकी बैटरी नंबर - 4 ने अपनी स्थापना के पचास वर्ष पूरे कर लिए। विभाग इसकी स्वर्ण जयंती मना रहा है।

उसके बाद श्रीमती मंडल ने ब्लास्ट फर्नेस - 4 का लाइट-अप किया। ज्ञातव्य है कि ब्लास्ट फर्नेस संख्या - 4 की अभियान मरम्मत पूरी हो गई है और इसमें कई नई सुविधाएं जोड़ी गई हैं। इसके पहले, उन्होंने जैविक उद्यान में पौधरोपण किया और जगन्नाथ मंदिर में पूजा-अर्चना भी की। उन्होंने एसएमएस-न्यू (एसएमएस -1) के स्लैब कॉस्टर एरिया का दौरा किया, जिसकी कमीशनिंग गत वर्ष हुई थी। प्लांट दौरे के क्रम में सेल अध्यक्ष ने एसएमएस-2 कन्वर्टर एरिया का दौरा भी किया और नई सुविधाओं का अवलोकन किया।

संयंत्र दौरे के बाद मंडल इस्पात भवन स्थित ईआरपी डाटा सेंटर गई जहां उन्हें ईआरपी में समावेश की गई नई सुविधाओं से अवगत कराया गया। इसके बाद उन्होंने सेल फुटबॉल अकादमी छात्रावास का दौरा किया और कैडेटों से बातचीत की। इस दौरान उनके साथ निदेशक प्रभारी बीएसएल अमरेंदु प्रकाश, अधिशासी निदेशक तथा अन्य वरीय अधिकारी भी मौजूद थे। उन्होंने संयंत्र के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठकें कीं। इन बैठकों के दौरान सेल के निदेशक (तकनीकी, परियोजना और कच्चा माल) एके सिंह सहित निदेशक प्रभारी बीएसएल, अधिशासी निदेशक, मुख्य महाप्रबंधक, विभागाध्यक्ष तथा अन्य वरीय अधिकारी उपस्थित थे। इसमें प्लांट के इस वर्ष के अब तक

के परफॉरमेंस की समीक्षा की गई और इस वित्तीय वर्ष के शेष अवधि की प्लानिंग पर चर्चा की गई। इसके अलावा ब्लास्ट फर्नेस, एसएमएस, डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन तथा पर्यावरण से सम्बंधित पहलुओं पर भी बैठक की गई। सेल अध्यक्ष शनिवार पूर्वाह्न बोकारो से रवाना हो गईं। सेल अध्यक्ष के आगमन को लेकर बोकारो की मुख्य सड़कों, डिवाइडर और गोलंबरों को आकर्षक तरीके से सुसज्जित किया गया था।

दिलेरी गोमिया विधायक के बेटे शशि शेखर ने माउंट मनिरंग पर राष्ट्रध्वज फहराया

19000 फीट की ऊंचाई पर लहराया तिरंगा

संवाददाता

बोकारो : जिले की एक और प्रतिभा ने राष्ट्रीय स्तर पर बोकारो व झारखंड का नाम रोशन किया है। कसमार के रहने वाले शशि शेखर ने 19000 फुट की ऊंचाई पर स्थित माउंट मनिरंग की चोटी पर राष्ट्रध्वज तिरंगा लहराया है। उन्होंने माउंट मणिरंग के समिट कैंप पर तिरंगा फहराया है, जो कि लगभग 19000 फीट पर स्थित है। माउंट मनिरंग हिमाचल प्रदेश में स्थित भारत की सबसे ऊंची चोटियों में से एक है,जिसकी कुल ऊंचाई 21631 फुट है। तकनीकी संसाधनों की कमी के कारण उनका समूह चोटी तक नहीं पहुंच पाया। शशि शेखर गोमिया विधायक डॉ लंबोदर महतो के

बड़े पुत्र हैं। उन्होंने पश्चिम बंगाल के सबसे पुराने माउंटेनियरिंग क्लब में से एक ट्रैवेलर्स गिल्ड के सेक्रेटरी शांति रॉय के मार्गदर्शन में इस एक्सपीडिशन का प्रयास किया।

शशि शेखर ने इससे पूर्व नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ माउंटेनियरिंग एंड एडवेंचर स्पोर्ट्स (एनआईएमएएस), अरुणाचल प्रदेश से पर्वतारोहण का कोर्स किया है। वहां उन्होंने 16500 फुट पर स्थित गोरिचेन ग्लेशियर पर ट्रेनिंग किया था। पर्वतारोहण के शौकीन शशि शेखर का आगे चलकर कई ऊंची चोटियों पर तिरंगा फहराने का लक्ष्य है। उनकी इस उपलब्धि पर भी गणमान्य लोगों ने उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं दी है।

अब आवाज से होगा कोरोना टेस्ट

तकनीक... स्मार्टफोन एप की मदद से पता चलेगी बीमारी

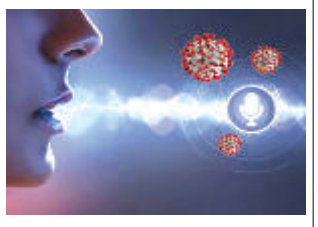

लंदन : कोरोना महामारी की जांच को लेकर एक क्रांतिकारी तकनीक सामने आई है। दुनिया में कोरोना को आए तीन साल से ज्यादा समय होने वाला है, लेकिन अब तक यह समाप्त नहीं हुआ है। कई गरीब देशों में कोरोना की जांच के लिए बेहतर सुविधा नहीं है। अब तक आरटीपीसीआर को कोरोना के लिए सबसे सटीक टेस्ट माना जाता है, लेकिन टेस्ट का रिजल्ट आने में समय लगता है। इन्हीं कठिनाइयों को दूर कर वैज्ञानिकों ने एक ऐसा स्मार्टफोन एप विकसित किया है, जिसकी मदद से व्यक्ति की आवाज से कोरोना टेस्ट होगा है। यानी स्मार्टफोन में व्यक्ति की आवाज का नमूना लेकर कुछ ही मिनट में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस की मदद से सटीक पता लगा लिया जाएगा कि उस व्यक्ति में कोरोना संक्रमण है या नहीं। वैज्ञानिकों का दावा है कि आर्टिफिशियल मॉडल पर आधारित यह एप रैपिड एंटीजन टेस्ट या अन्य माध्यमों की तुलना में ज्यादा सटीक और जल्दी में होगा। सबसे बड़ी बात यह है कि इस एप की मदद से कोरोना टेस्ट करने में बहुत मामूली खर्च लगेगा और इस करने में भी बहुत आसानी होगी। इस लिहाज से गरीब देशों में जहां आरटीपीसीआर **(शेष पेज- 7 पर)**

संपादकीय

नेताजी को सच्चा सम्मान

अंग्रेजों को भारत की धरती से खदेड़ने और देश को आजादी दिलाने में अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले महान क्रांतिकारियों में अग्रणी रहे नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को आजादी के बाद कांग्रेस की सरकारों ने कभी भी उचित सम्मान नहीं दिया, क्योंकि नेताजी की लोकप्रियता और उनके अदम्य साहस से कांग्रेस के उस समय के कतिपय नेता सत्ता सिंहासन डोल जाने के खतरे से भयभीत थे। लेकिन, नेताजी की कीर्ति और उनके बलिदान की गाथा देशवासियों के हृदय में सदैव गूंजती रही। भारत के अग्रणी पंक्तियों के क्रांतिवीरों में उनकी गाथा सदैव ही गायी जाती रहेगी। आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली के इंडिया गेट पर स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा का अनावरण कर निश्चय ही उन्हें सच्चा सम्मान देने का प्रयास किया है। नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 28 फीट ऊंची यह प्रतिमा उसी स्थान पर स्थापित की गई है, जहां इसी वर्ष 23 जनवरी को पराक्रम दिवस के अवसर पर नेताजी की होलोग्राम प्रतिमा का अनावरण किया गया था। यह प्रतिमा मुख्य मूर्तिकार अरुण योगीराज द्वारा तैयार की गई है, जिसे एक ग्रेनाइट पत्थर पर उकेरा गया है और इसका वजन 65 मीट्रिक टन है। प्रतिमा का अनावरण नेताजी सुभाष चन्द्र बोस द्वारा अंग्रेजों से लोहा लेने के लिए स्थापित आजाद हिन्द फौज के पारंपरिक गीत 'कदम-कदम बढ़ाए जा' की धुन के साथ किया गया। इस अवसर पर एक भारत-श्रेष्ठ भारत और अनेकता में एकता की भावना को प्रदर्शित करने के लिए देश के कोने-कोने से आए 500 नर्तकों द्वारा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। करीब 26,000 घंटे के अथक कलात्मक प्रयासों से अखंड ग्रेनाइट को तराश कर 65 मीट्रिक टन वजन की यह प्रतिमा तैयार की गई है। काले रंग के ग्रेनाइट पत्थर से निर्मित 28 फुट ऊंची यह प्रतिमा इंडिया गेट के समीप एक छतरी के नीचे स्थापित की गई है। नेताजी की इस प्रतिमा को पारंपरिक तकनीकों और आधुनिक औजारों का उपयोग कर पूरी तरह हाथों से बनाया गया है, जिसे अरुण योगीराज के नेतृत्व में मूर्तिकारों के एक दल ने तैयार की है। यह प्रतिमा भारत की विशालतम, सजीव, अखंड पत्थर पर हस्त-निर्मित प्रतिमाओं में से एक है। ग्रेनाइट के इस अखंड पत्थर को तेलंगाना के खम्मम से 1665 किलोमीटर दूर नयी दिल्ली तक लाने के लिए 100 फुट लंबा और 140 पहियों वाला एक ट्रक विशेष तौर पर तैयार किया गया था। उल्लेखनीय है कि इतिहास के पन्नों में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के निधन की घटना वर्ष 1945 में हुई एक विमान दुर्घटना में बताई जाती है, लेकिन देश इस बात को आज भी मानने को तैयार नहीं है। क्योंकि, उनके निधन की गुत्थी अभी भी अनसुलझी है। खासकर, फैजाबाद के गुमनामी बाबा के साथ उनका नाम जुड़ने के बाद देश अभी भी नेताजी की मौत विमान दुर्घटना में होने की बात मानने को तैयार नहीं है। दरअसल, गुमनामी बाबा के निधन के बाद जो चीजें उनके घर से बरामद की गईं, उससे यह साफ जाहिर होता था कि वे कोई साधारण बाबा नहीं थे, बल्कि नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ही गुमनामी बाबा के रूप में वहां रहते थे। गुमनामी बाबा का गोल चश्मा और नेताजी के चश्मे में पूरी समानता थी। खैर, ये तो जांच का विषय है। लेकिन, भारत माता के इस वीर सपूत ने अपनी साहस और दूरदर्शिता की वजह से अंग्रेजों की नींद हराम कर रखी थी। आजाद हिन्द फौज की स्थापना से लेकर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले नेताजी का संघर्ष आज प्रत्येक भारतीय के लिए प्रेरणा है। दिल्ली के इंडिया गेट पर नेताजी की विशाल प्रतिमा का अनावरण कर केन्द्र की वर्तमान सरकार ने निश्चय ही उन्हें सच्चा सम्मान देने का प्रयास किया है।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

गर्व से कहो- हम हिंदीभाषी हैं

14 सितंबर : हिंदी दिवस पर विशेष

हिंदुस्तान और हिंदी का अटूट नाता है, परंतु दुर्भाग्यवश प्रकृति से उदार ग्रहणशील, सहिष्णु और भारत की राष्ट्रीय चेतना की संवाहिका हिन्दी आज अपने ही घर में अत्याधुनिकता की होड़ के कारण परायेपन का दंश झेलने को विवश है। हर वर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस पर कुछ हिंदीप्रेमियों के द्वारा याद तो रखा जाता है, लेकिन दिन-प्रतिदिन अंग्रेजी का आकर्षण हिंदी को कहीं न कहीं से दबाता या तोड़ता-मोड़ता जा रहा है। हिन्दी दिवस पर हम हर साल मात्रा उसी तरह से हिन्दीमय होते हैं, जिस तरह से 15 अगस्त या 26 जनवरी को हममें देशभक्ति का उफान आता है। इसके पीछे बहुत बड़ा कारण यह है कि हिंदीभाषी सदियों से हीनता के शिकार होते चले जा रहे हैं। आज हमारे देश में पुरानी बहुत सारी विद्यायें विलुप्त हो चुकी हैं। अगर उसका कुछ अंश मिलता है तो सीधे-साधे शब्दों में समझ में नहीं आता, क्योंकि किसी भी संस्कृति, विद्या एक युग से दूसरे युग तक भाषा पहुंचाने या संवहन का कार्य करती है।

आज लोगों की मानसिकता का इस स्तर तक पतन हो चुका है कि हिन्दी का प्रयोग करना खुद उन्हें हीनता का तथाकथित आभास करा रहा है। जबकि, हमें हिंदुस्तानी होने पर जितना गर्व है, उतना ही हिंदीभाषी होने पर भी होना चाहिए। वस्तुतः आज का शैक्षणिक परिवेश लोगों को बहुत हद तक ऐसा सोचने पर विवश कर रहा है। वर्तमान में हिन्दी की जो दुर्गति हो रही है, उसके लिए केवल एक पक्ष जिम्मेदार नहीं है। भारत की वर्तमान शिक्षा पद्धति में आज बालकों को पूर्व प्राथमिक से ही अंग्रेजी के गीत रटाये जाते हैं। यदि घर में बालक बिना अर्थ जाने ही आने वाले अतिथियों को अंग्रेजी में कविता आदि सुना दें, तो माता-पिता का मस्तक गर्व से ऊंचा हो जाता है। मेहमान भी बच्चों को अंग्रेजी ही सिखाने की नसीहत दिये चलते बनते हैं। आधुनिकता के नाम पर बच्चों पर अंग्रेजी थोपी जा रही है। उसे एक और एक ग्यारह समझ नहीं आएगा, लेकिन वो वन प्लस वन इलेवन जल्दी से समझ लेगा। हमारी भाषा को सबसे अधिक प्रभावित कर रही है फिल्में और टीवी, जो कहने को हिन्दी फिल्में होती है, लेकिन उसके शीर्षक से लेकर गीतों तक में अंग्रेजी का बोलबाला रहता है।

हमारे देश में कई सौ साल गुलाम रहने के बाद अलग-अलग भाषाओं और संस्कृति से प्रभावित होने के कारण हम खुद की भाषा से, खुद की पहचान से कमजोर होते जा रहे हैं। फलस्वरूप, आज हिंदी की प्रभाविता दिन-प्रतिदिन कमजोर होती जा रही है। कहने को तो बहुत से संगठन हिन्दी के विकास में प्रयास करने का दावा तो करते हैं, परंतु उनके कार्यालयीन कार्य में, उनकी बोलचाल में हिन्दी की बजाय अंग्रेजी की ही बहुतायत होती है। हम हिंदीभाषियों के दिमाग में हीनता इस कदर बढ़ गयी है कि हम अपनी चीजों की कमजोरी या अपरिपक्व समझते हैं और हम हीनता के शिकार हिंदीभाषी हिंदी को और हीन करते जा रहे हैं। जबकि, सच्चाई तो यह है कि जैसे हिंदी दिन-प्रतिदिन हीन हो रही है, हम अपनी संस्कृति, सभ्यता या को भी हीन करते जा रहे हैं।

वास्तव में हिन्दी पूरे भारत की संपर्क भाषा है, इसका संरक्षण व संवर्द्धन आवश्यक है। हिंदी सिर्फ हमारी भाषा ही नहीं, अपितु हमारी पहचान है और इसे खोकर हम अपनी पहचान खो रहे हैं। समय रहते हिंदी भाषा के संरक्षण के लिए सभी को प्रयास करने की आवश्यकता है। इसके लिये जनमानस में एक वैचारिक और मानसिक क्रांति लानी होगी। हमें खुद अपनी पहचान के प्रति जागरुक होना होगा। बता दें कि भारत की स्वतंत्रता के बाद 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी की खड़ी बोली ही भारत की राजभाषा होगी। इसी महत्त्वपूर्ण निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिन्दी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिये राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर सन 1953 से संपूर्ण भारत में 14 सितंबर को प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसलिए, गर्व से कहो- हम हिंदीभाषी हैं।

कब मुक्त होगा अपना देश इन घुसपैठियों से ?

- डॉ. सविता मिश्रा मागधी, बेंगलुरू

हमारा देश सदियों से शरणार्थियों का स्वागत करता आया है। इस स्वागत में कई बार धोखा भी खा चुका है। 711 ई. में सिंध के राजा दाहिर ने अरबियों को व्यापार के लिए शरण दी थी, जिसका नतीजा यह निकला कि सबसे पहले उन्हीं का कत्ल किया शरणार्थियों ने अपने आका मो. बिन कासिम को अरब से भारी सेना के साथ बुला सिंध पर आक्रमण कराकर। मोहम्मद गजनी फिर मोहम्मद गोरी ने लूटपाट और अंधाधुंध कत्लेआम कर धीरे-धीरे पूरे भारत को गुलाम बना दिया। यही हाल अंग्रेजों ने किया था। आजादी का 75वां साल चल रहा है। देश अमृत महोत्सव मना रहा है और ये घुसपैठिए अंदर-अंदर हमारी एकता तोड़ अपने कुनबे को बलशाली बना रहे हैं।

सरकारी छुट्टी रविवार को न होने देना, शुक्रवार को छुट्टी का जामा पहनाना। सरकारी स्कूल में सनातनी छात्रा को हिज़ाब पहनने पर मजबूर करना। अंकिता और नैनी जैसी मासूम लड़कियों को अपने जाल में फंसाकर धर्म परिवर्तन करने पर मजबूर करना और न मानने पर उनका कत्ल सरेआम कर देना। ये सारी बातें प्रिंट मीडिया या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के द्वारा देश का बच्चा-बच्चा देख सुन पढ़ रहा है। फिर, आला अधिकारी कैसे गांधारी बने बैठे हैं...?

सवाल उठता है कि ये रोहंगिया कहां से आए...? ये बहुत अच्छे थे तो जिस देश में रह रहे थे, उस देश से इतनी बड़ी संख्या में इन्हें क्यों भगा दिया गया? ये सारे के सारे म्यामांर से खदेड़े गए हैं। वह देश बौद्ध धर्म का अनुयायी है। बुद्धिस्ट शांत स्वभाव के हिंसा से दूर रहने वाले होते हैं। 1948 में जब म्यांमार आजाद हुआ तब रोहंगियों की संख्या कम थी। उन्हें नागरिकता देने के लिए दो शर्त रखी गई। पहली शर्त यह थी कि म्यांमार भाषा बोलनी आनी चाहिए। दूसरी शर्त यह थी कि आजादी से पहले वहां के निवासी थे, इसका पक्का सबूत दें। दोनों शर्तों पर खरा न उतर पाने के कारण उन्हें नागरिकता से वंचित कर दिया गया था। इन्होंने अपनी संख्या तेजी से बढ़ाकर उपद्रव मचाना प्रारंभ कर दिया। चोरी-डकैती, लूटपाट, बलात्कार-हत्या आदि करना इनके लिए आम बात हो गई

थी। इनके अत्याचार से तंग आकर म्यांमार के निवासियों ने भी हथियार उठा लिया और रोहंगियों को वहां से खदेड़ दिया।

म्यांमार से हमारे देश के चार राज्य की सीमाएं मिलती हैं। अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर और मिजोरम। इन राज्यों की सीमाओं को चुपके से लाकर भारत में घुस आए। कुछ बांग्लादेश भाग गए। बांग्लादेश से खदेड़े गए तो भी उन्हें भारत ही दिखाई दिया। भारत के छह राज्य की सीमाएं बांग्लादेश से मिलती हैं। झारखंड, पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम। सभी राज्य के किनारों की अगर अच्छे से छानबीन की जाए तो देखा जाएगा कि वह सभी किनारा मुस्लिम बहुल इलाका बन गया है, जहां वे अपनी धांधली चला रहे हैं। उन से चुनकर आए विधायक भी उन्हीं की तरफदारी करते हैं।

देश को शांति प्रिय रखना है तो इनकी पहचान कर, इन्हें देश से अतिशीघ्र निकालना होगा। इनके आधार कार्ड, वोटर कार्ड आदि खंगालने होंगे। इतनी आसानी से ये सब इन्हें कैसे उपलब्ध हो जाता है, इसके लिए उपलब्ध कराने वाले स्थानों, संस्थाओं आदि पर भी कड़ी निगरानी रखते हुए उन्हें भी दण्डित करना होगा। क्योंकि, 40 लाख से अधिक रोहंगियों का भार भारत की जनता उठा रही है। साथ ही इनके बढ़ते अत्याचार भी सह रही है। वेश बदलकर हिन्दू लड़कियों को टारगेट करना इन्हें सिखाया जाता है। केन्द्र सरकार ही नहीं, राज्य सरकार को भी जागना होगा, तभी हम आने वाली पीढ़ी को स्वस्थ भारत दे सकते हैं।

(लेखिका स्वतंत्र विचारक हैं और ये इनके निजी विचार हैं।)

विस्थापित होंगे पुनर्स्थापित !

बीएसएल और रेलवे आपसी समन्वय से करेंगे समस्या का समाधान

सरकार व प्रशासन ने दिखाई संजीदगी, मंत्री ने दिए दिशा-निर्देश

संवाददाता

बोकारो : चास अंचल के धनगड़ी मौजा अंतर्गत प्रस्तावित तालगड़िया से बोकारो नॉर्थ केबिन रेलवे लाइन तक की दोहरीकरण परियोजना के तहत उत्पन्न समस्या का समाधान शीघ्र होने की संभावना बलवती हो गई है। इस मसले को बीएसएल और रेलवे आपसी समन्वय के साथ सुलझाएगा। इस दिशा में सरकार और जिला प्रशासन ने संजीदगी दिखाई है। पिछले दिनों झारखंड सरकार के मंत्री जगरनाथ महतो ने बोकारो परिसदन सभागार में बीएसएल प्रबंधन, रेलवे और जिला प्रशासन के अधिकारियों के साथ बैठक की। इसमें उक्त दोहरीकरण परियोजना के तहत उत्पन्न समस्या के संबंध में समीक्षा की गई।

उन्होंने बैठक में उपस्थित उपायुक्त कुलदीप चौधरी, बीएसएल प्रबंधन एवं रेलवे के पदाधिकारियों से क्रमवार समस्या के संबंध में जानकारी ली। मंत्री ने रेलवे एवं बीएसएल प्रबंधन को आपसी समन्वय स्थापित कर समस्या का निदान करने को लेकर जरूरी दिशा-निर्देश दिया। उल्लेखनीय है कि जिले में रेलवे से संबंधित कई परियोजनाओं का कार्य प्रगति पर है। कार्य को गति देने व परियोजना को ससमय पूरा करने को लेकर व्याप्त समस्याओं को दूर करने की दिशा में जिला प्रशासन द्वारा लगातार कार्रवाई की जा रही है।

बैठक में अपर समाहर्ता सादात अनवर, अनुमंडल पदाधिकारी चास दिलीप प्रताप सिंह शेखावत, डीपीएलआर मेनका कुमारी, डीसीएलआर जेम्स सुरीन, अंचलाधिकारी दिलीप कुमार व अन्य उपस्थित थे।

इसके पूर्व, समाहरणालय स्थित कार्यालय कक्ष में उपायुक्त कुलदीप चौधरी ने रेल व संबंधित अधिकारियों के साथ बैठक की। इसमें उपायुक्त ने रेल अधिकारियों से संचालित परियोजनाओं में भूमि संबंधित मामलों की प्रगति की क्रमवार जानकारी ली। उन्होंने महेशपुर, धनगेड़ी, सियालगजरा एवं उसरडीह में प्रस्तावित रेल कार्यों को लेकर विस्तृत जानकारी ली। रेल अधिकारियों को सियालगजरा में विस्थापित व्यक्ति को पुनर्वास व पुनःस्थापन कराने का निर्देश दिया एवं उसरडीह में जिला भू-अर्जन कार्यालय से समन्वय स्थापित कर सप्ताह भर में लाभुक को मुआवजा राशि मुहैया कराने को लेकर कार्रवाई करने को कहा। इसके अलावा धनगड़ी को लेकर डीपीएलआर मेनका कुमारी को जरूरी दिशा- निर्देश दिया। उपायुक्त ने अपर समाहर्ता सादात अनवर को इन मामलों की मॉनिटरिंग कर प्रक्रिया में तेजी लाने को कहा। उन्होंने अंचलाधिकारी (चास) दिलीप कुमार को भी जरूरी निर्देश दिया। मौके आद्रा मंडल के रेलवे पदाधिकारी, डीपीएमयू के संजय कुमार आदि मौजूद रहे।

अब 45 गांवों को आरोग्य बनाएगी 'इस्पात संजीवनी'

संवाददाता

बोकारो : बोकारो के इस्पात भवन स्थित कमेटी रूम में बोकारो इस्पात संयंत्र तथा पीरामल हेल्थ केयर के बीच समझौता ज्ञापन पर किए गए। बीएसएल की ओर से चीफ मेडिकल ऑफिसर (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं) डॉ. बीबी करुणामय तथा पीरामल हेल्थ केयर की तरफ से चीफ मैनेजर पीरामल हेल्थ केयर एन रत्नम ने हस्ताक्षर किये। इस दौरान अधिशासी निदेशक संजय कुमार, मुख्य महाप्रबंधक प्रभारी बीएस पोपली, पवन कुमार, मुख्य महाप्रबंधक हरिमोहन झा, महाप्रबंधक (पीआर) एवं सीओसी एम. धान, एसीएमओ (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं) डॉ. बीके शर्मा, एसीएमओ (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं) डॉ. वी. घानेकर, महाप्रबंधक(सीएसआर) श्री सी आर के सुधांशु, एसीएमओ(चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं) डॉ सोफिया अहमद, वरीय प्रबंधक (पीएसएमआरआई) एचबी इली, वरीय प्रबंधक (पीएसएमआरआई) एम. कैंथ सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

उल्लेखनीय है कि बीएसएल अपनी सीएसआर हेल्थकेयर पहल के तहत पीरामल हेल्थ केयर के सहयोग से इस्पात संजीवनी का संचालन करता है, जो कि वर्ष 2013 से लगातार नियमित रूप से परिक्षेत्रीय गांवों में मोबाइल मेडिकल यूनिट द्वारा ग्रामीणों को निःशुल्क प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान कर रहा है।

इस्पात संजीवनी की इस पहल के तहत अब तक एक लाख से अधिक लोगों लाभान्वित हुए हैं। इस मोबाइल मेडिकल यूनिट पहल के तहत विशेषज्ञ चिकित्सक तथा मेडिकल स्टाफ अपनी टीम के साथ पूर्व में प्रति माह 44 जगहों पर जाती थी, जिसे इस नए समझौता ज्ञापन के तहत अब बढ़ाकर 45 स्थान प्रतिमाह कर दिया गया है। इस्पात संजीवनी की टीम बोकारो स्टील सिटी के बीएसएल संचालित सीएसआर स्कूल, मानव सेवा आश्रम और आशालता केंद्र जैसी जगहों का भी दौरा करेगी। इस्पात संजीवनी द्वारा समाज और आसपास के गांवों को नियमित आधार पर निरंतर स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए अगले 3 वर्षों के लिए पीरामल हेल्थ केयर के साथ एमओए (समझौता ज्ञापन) का नवीनीकरण किया गया।

पहल 'डालमिया वाव' बस के माध्यम से बालीडीह में कंप्यूटर प्रशिक्षण शुरू

गांवों के बच्चे सीख रहे तकनीकी कौशल

संवाददाता

बोकारो : चलंत कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्र डालमिया वाव बस के माध्यम से शनिवार को कंप्यूटर प्रशिक्षण का प्रारंभ बालीडीह स्थित गोविंद विद्यालय में शुरू हुआ। प्रशिक्षण का उद्घाटन, डालमिया रिक्रिएशन क्लब की अध्यक्ष निक्की रंजन ने की। इस अवसर पर विद्यालय के छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए उनकी भावनाओं को जाना। इस अवसर पर छात्र छात्राओं की खुशियां चेहरे पर साफ नजर आ रही थी। दरअसल, वाव बस एक चलंत कंप्यूटर लैब है, जिसमें 21 की संख्या में डेस्कटॉप लगे हैं,एवं पूरा लैब वातानुकूलित है। इसमें वाई-फाई के जरिए इंटरनेट की भी व्यवस्था है। प्रिंटर, उच्च तकनीक से युक्त आंतरिक एवं बाह्य स्मार्ट बोर्ड, सर्विलांस कैमरा एवं बायोमीट्रिक सिस्टम इसकी गुणवत्ता को और आकर्षक बनाते हैं। अनुदेशक प्रभात कुमार सिंह के द्वारा उपस्थित लोगों एवं छात्र-छात्राओं को जानकारी दी गई कि पूरा कोर्स एक महीने का है, जिसमें सभी बच्चों को कंप्यूटर चलाने की बेसिक जानकारी कोर्स मैनुअल के अनुसार प्रदान की जाएगी।

महिलाओं व बेरोजगारों को भी देंगे ट्रेनिंग

डालमिया सीएसआर हेड उमेश कुमार ने बताया कि इसके पूर्व भी इसी विद्यालय में कंप्यूटर प्रशिक्षण का कार्यक्रम किया गया। आगे भी विद्यालय प्रबंधन के आग्रह पर इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम किए जाएंगे। छात्र-छात्राओं के अलावे नजदीकी स्वयंसहायता समूहों की महिलाओं एवं शिक्षित बेरोजगारों को यह ट्रेनिंग दी जाएगी। वर्तमान में कुल 120 लाभार्थियों को प्रशिक्षित करने का निर्णय लिया गया है। विद्यालय के प्राचार्य दाताराम महतो ने इस सुविधा के लिए डालमिया प्रबंधन के प्रति आभार जताया। आयोजन की सफलता में सीएसआर विभाग के पार्थ सारथी, प्रभात सिंह, धनंजय एवं मथुरा का अहम योगदान रहा। इससे पूर्व मिडिल स्कूल, बिशुनपुर के-60, गोड़ाबाली गांव में 20, बिशुनपुर के नजदीकी गांव में 180, मिडिल स्कूल गोड़ाबाली में 88, गोविंद माध्यमिक विद्यालय के 120, एचपीसीएल प्लांट के 60, डालमिया सीमेंट प्लांट परिसर में 150, बालिका उच्च विद्यालय तांतरी के 40 एवं तुपकाडीह गांव में 60 लाभार्थियों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

अगले वर्ष धूमधाम से फिर लगेगा स्वदेशी मेला, तैयारी को ले मंथन

संवाददाता

बोकारो : स्वदेशी जागरण मंच की बैठक क्षेत्रीय संयोजक सचिन्द्र कुमार बरियार की अध्यक्षता में लोहांचल कॉलोनी में हुई। बैठक में मंच द्वारा किए गए साल भर के कार्यों की समीक्षा की गई। साथ ही, आगामी वर्ष होने वाले स्वदेशी मेला की तैयारी को लेकर विचार-विमर्श किया गया। श्री बरियार ने कहा कि जिलावासियों को स्वदेशी मेला का बेसब्री से इंतजार रहता है। पिछले दो वर्षों में कोरोना के कारण मेला नहीं लग पाया, जिस कारण स्थानीय लोगों में मेला के प्रति और संवेदना बढ़ गई है।

उन्होंने कहा कि हमारा दायित्व है कि स्वदेशी के प्रति लोगों में बढ़ रही भावनाओं का कद्र करते हुए आयोजन को वृहद रूप से सफल करने में अभी से जुट जाएं। 2023 में पूरे धूमधाम के साथ अगला स्वदेशी मेला लगाया जाएगा। उन्होंने स्वावलंबी भारत अभियान पर मुख्य रूप से चर्चा की। कहा कि मंच द्वारा जितने भी कार्य किए जा रहे हैं, उनकी सफलता के लिए बोकारो जिले में अपने 14 सहयोगी संगठनों की मदद ली जा सकती है। बैठक में मुख्य रूप से सनातन प्रसाद सिन्हा, प्रमोद कुमार सिन्हा, मृत्युंजय कुमार सिन्हा, प्रवीण चौधरी, जयशंकर प्रसाद, अजय चौधरी दीपक, वीरेंद्र कुमार सिंह आदि मौजूद रहे।

तीन-तीन महीने बाद भी नहीं बन पाता जन्म-मृत्यु प्रमाणपत्र, कार्यालय का चक्कर काटते हैं लोग

विवेकहीनता बनी परेशानी का सबब

अधिकारी की मनमानी के खिलाफ आक्रोश बना आंदोलन

संवाददाता

बोकारो : बोकारो के सेक्टर-1 स्थित जन्म-मृत्यु निबंधन कार्यालय की कार्यप्रणाली काफी लचर होने से लोगों को काफी परेशानी हो रही है। तीन-चार महीने बाद भी प्रमाणपत्र नहीं बन पा रहा है। जन्म-मृत्यु प्रमाणपत्र लेने के लिए लोग महीनों चक्कर काटने को विवश हैं और लोगों का जनाक्रोश अब आंदोलन का रूप ले चुका है। इंडियन पीपुल्स पार्टी के बैनर तले बीते दिनों निबंधन कार्यालय के समक्ष धरना दिया गया। आक्रोशित लोगों ने रजिस्ट्रार पर धांधली और विवेकहीनता का आरोप लगाकर 10 सूत्री मांगों को ले उनका पुतला भी फूंका। धरना का नेतृत्व कर रहे झापीपा के संस्थापक संयोजक अरविंद कुमार कर्ण ने रजिस्ट्रार डॉ. सुजीत कुमार परेरा को अविलंब पद से बर्खास्त करते हुए उनकी अब तक की कार्यशैली की जांच की मांग बीएसएल प्रबंधन से की है। उन्होंने कहा कि उनकी विवेकहीनता और दुर्व्यवहारयुक्त लचर कार्यशैली के कारण आज विधवा महिलाएं महीनों से इस दफ्तर का चक्कर काटने को विवश हैं। कर्ण ने इसके अलावा कार्यालय में महिलाओं एवं पुरुषों के लिए सुलभ शौचालय, कार्यालय को सुचारू रूप से चलाने के लिए सुबह 10 से शाम 5 बजे तक की कार्यावधि तय करने एवं जन्म एवं मृत्यु प्रमाण पत्र निर्गत करने की समय-सीमा सुनिश्चित करने सहित अन्य मांगें भी कीं।

उनके आंदोलन को मुख्य अतिथि क्रांतिकारी इस्पात मजदूर संघ के महामंत्री माननीय संग्राम सिंह, कोल्हान प्रमंडल प्रभारी (भाजपा) मिथिलेश पाल सिंह, जनता दल यूनाइटेड के पूर्व जिला अध्यक्ष प्रवीण कुमार, वर्तमान जिला उपाध्यक्ष राज किशोर सिंह, झारखंड मुक्ति मोर्चा से शिबू सोरेन के आवासीय प्रभारी विरंची कुमार, सुभाष चंद्र महतो, झारखंड मुक्ति मोर्चा के ग्रीन टाइगर फोर्स के अध्यक्ष संजय गागरई, जैनामोड़ चेंबर ऑफ कॉमर्स के संजय सिंह एवं बोकारो महिला समिति के रश्मि संगीता टोपो, पूनम तिर्की, पूनम देवी आदि ने भी अपना समर्थन दिया है। मौके पर राजकुमार, अवधेश सिंह, मनोज, कमलेश, संतोष, देबुलाल नायक, बुंदेल कुमार, समशुद्दीन अंसारी, रविंद्र सिंह, राजू नायक, संजय सिंह, जेपी सिंह, अमरनाथ सिंह, रणधीर, वकील, संजय सिंह, प्रशांत मिश्रा आदि मौजूद रहे।

बार-बार फोन करने के बावजूद अधिकारी का कोई जवाब नहीं

जन्म-मृत्यु निबंधन कार्यालय से लोगों को होनेवाली परेशानी और झापीपा नेता की ओर से लगाए गए आरोपों के बारे में जब डॉ. परेरा से संपर्क करने का काफी प्रयास किया गया, परंतु सफलता नहीं मिली। उनके मोबाइल पर इस संवाददाता ने कई बार फोन किया, परंतु उन्होंने फोन रिसीव नहीं किया और न ही कॉल बैक करने की जरूरत समझी।

गड्ढे में तब्दील हुई ससबेड़ा पूर्वी-पश्चिमी को जोड़नेवाली सड़क

गोमिया : किसी भी क्षेत्र का विकास का आईना सड़क होती है सड़क अच्छी हो तो घंटों की दूरी मिनटों में तय की जा सकती है। अगर सड़क जर्जर हो तो मिनटों का सफर घंटे लगते हैं? गोमिया में राजाराम होटल से मुन्ना का पान गुमटी, ससबेड़ा पश्चिमी-पूर्वी कै जोड़ने वाली तक की सड़कें गड्ढों में तब्दील हो गई हैं, जो दुर्घटना को बुलावा देती रहती है। राजाराम होटल से मुन्ना पान गुमटी की दूरी लगभग 2 से 3 किलोमीटर है सड़क पर दर्जनों बड़े छोटे गड्ढे बन गए हैं, जिससे वाहनों का परिचालन प्रभावित हो रहा है। साथ ही वृद्धो, स्कूली छात्र-छात्राएं भी चोटिल होते रहते हैं। बता दें कि कई वर्षों पहले उक्त सड़कों का निर्माण हुआ था। सड़क बने लगभग 6-7 साल हो गए, परंतु एक बार भी इसकी मरम्मत की दिशा में कोई भी प्रयास नहीं किया जा सका है। घरों से निकलनेवाला पानी और बारिश का पानी सड़क पर बने गड्ढों में जमा हो जाने से पैदल चलना भी दूभर हो जाता है।

विधायक कराएं मरम्मत : मुखिया

नवनिर्वाचित मुखिया अंशु कुमारी ने गोमिया विधायक डॉ. लंबोदर महतो से आगामी पर्व-त्योहारों में लोगों की अधिक आवाजाही के मद्देनजर उक्त सड़क की शीघ्र मरम्मत कराने की मांग की है। मुखिया सहित पिंटू कुमार, पिंटू पासवान, विजय प्रसाद, वासुदेव ठाकुर, मुकेश ठाकुर, गोपाल मुर्मू, अजय कसेरा, राजेंद्र प्रसाद, मिट्ठू कुमार आदि ग्रामीणों ने भी यह मांग की है।

अध्यात्म 26-27 सितंबर को फुसरो की शारदा कॉलोनी में बहेगी आध्यात्मिकता की बयार

भूमि पूजन के साथ साधना शिविर की तैयारी तेज

संवाददाता

बेरमो : अंतरराष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार (निखिल मंत्र विज्ञान) की ओर से आगामी 26-27 सितंबर को बोकारो जिले के बेरमो अनुमंडल स्थित फुसरो में भगवती दुर्गा सायुज्य त्रिशक्ति साधना शिविर की तैयारियां बीते हफ्ते भूमि पूजन के साथ तेज हो गईं। वैदिक मंत्रोच्चार के बीच विधिवत निखिल शिष्यों ने शारदा कॉलोनी के मकोली ग्राउंड में भूमि पूजन किया। इसके साथ ही पंडाल निर्माण भी शुरू हो गया। भूमि पूजन के साथ-साथ गणपति पूजन, गुरु पूजन, आरती, हवन, महाप्रसाद वितरण और भजन-कीर्तन के कार्यक्रम भी हुए। इसमें बोकारो सहित धनबाद, गिरिडीह, हजारीबाग आदि जिलों से लगभग 400 साधक-साधिकाएं शामिल हुए।

मौके पर पीएन पांडेय, मदन मोहन अग्रवाल, भगवान दास, विजय कुमार झा, देवतानन्द दुबे, हरिकिशोर मंडल, जगदीश स्वर्णकार, अमृत दिगार, महावीर, राजन करमाली, राधेश्याम दिगार, अनिल कुमार रजवार, जयप्रकाश चौहान, प्रह्लाद राम, माहरू सिंह, रसराज दिगार, पोबिर बाउरी, विनोद बाउरी, नीता देवी, निवेदन गुप्ता, कालेश्वर मिस्त्री, उमाशंकर महतो, फकीर चन्द बाउरी, राजू राम, टेकलाल महतो, अशोक प्रसाद केसरी, निर्मल विश्वकर्मा, कान्ति देवी, दिलीप साव, नेहरू करमाली, पारस नाथ केसरी सहित कई जिलों के साधक मौजूद रहे।

विदित हो कि परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी महाराज (डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली) एवं वंदनीया माता भगवती की दिव्यतम छत्रछाया में होनेवाले इस शिविर में झारखंड, बिहार, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ सहित देश के कोने-कोने से हजारों की संख्या में निखिल शिष्य शामिल होंगे। शिविर में परमपूज्य गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली साधकों को गुरु-दीक्षा प्रदान करने के साथ-साथ उनकी आवश्यकता के अनुसार विभिन्न प्रकार की विशेष शक्तिपात दीक्षाएं भी प्रदान करेंगे।

हफ्ते की हलचल

राष्ट्र-निर्माण में शिक्षकों की सशक्त भूमिका : प्रमोद

बोकारो : एनपी टीचर ट्रेनिंग कॉलेज एवं एनपी संध्या काली स्नातक महाविद्यालय चीराचास में शिक्षा दिवस कार्यक्रम धूमधाम से मनाया गया। सर्वप्रथम विद्यालय के सचिव प्रमोद सिंह ने सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन के चित्र पर माल्यार्पण कर शुभारंभ किया। सचिव प्रमोद सिंह ने कहा कि हम सभी को सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन के बताएं आदर्शों पर चलकर महाविद्यालय का नाम रोशन करना चाहिए। बताया कि शिक्षक कुम्हार की तरह होते हैं जो गीली मिट्टी से विभिन्न प्रकार के वस्तुओं का निर्माण करते है। शिक्षकों की भूमिका राष्ट्र निर्माण में अग्रणी है। महाविद्यालय के एचओडी संजीव कुमार ने सभी विद्यार्थियों को अनुशासन एवं नियमित वर्ग आकर आदर्श शिक्षक बनने की शुभकामनाएं दीं।

सामाजिक कार्यों के लिए सम्मानित हुए अनिल अग्रवाल

बोकारो : बेरमो गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा संडे बाजार में पूर्णिमा के अवसर पर गुरु का अखंड पाठ का आयोजन किया गया। इसके बाद भजन कीर्तन के बाद सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इसमें सिख समुदाय के झारखंड प्रदेश प्रबंध समिति के प्रधान, राज्य के अन्य गुरुद्वारा के प्रधान सहित बेरमो के गणमान्य लोगों को सम्मानित किया। वहीं क्षेत्र में लगातार सामाजिक कार्यों के लिए अखिल भारतीय अग्रवाल कल्याण महासभा के अध्यक्ष अनिल अग्रवाल को सरोपा देकर सम्मानित किया गया। प्रदेश गुरुद्वारा प्रधान शैलेन्द्र सिंह ने सम्मानित करते हुए बेरमो क्षेत्र गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा सेंट्रल कमेटी की प्रशंसा करते हुए कहा कि खुशी की बात है कि यहां अन्य धर्मावलंबियों का भरपूर सहयोग रहता है। बिना भेदभाव के सभी लोग कार्यक्रम में शामिल होते हैं। मौके सिख समुदाय के सरदार इंद्रजीत सिंह, अवतार सिंह,तीरथ सिंह,राणा सिंह, गुरमीत सिंह, गुरपाल सिंह, कमल सिंह, बॉबी सिंह, शार्दुल सिंह, अमन सिंह, मोहित सिंह आदि मौजूद रहे।

पंच मंदिर दुर्गा पूजा कमेटी का गठन किया गया

बोकारो थर्मल : बोकारो थर्मल सिक्स यूनिट स्थित पंच मंदिर प्रांगण में शनिवार को प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी पंच मंदिर दुर्गा पूजा आयोजन को लेकर बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता जानकी महतो ने की। बैठक में सर्वसम्मति से इस वर्ष भी दुर्गा पूजा मनाने का निर्णय लिया गया। बैठक में एक कमेटी का गठन किया गया, जिसमें अध्यक्ष सुनील चौधरी, कार्यकारी अध्यक्ष जोगेंद्र गिरि, उपाध्यक्ष जितेंद्र सिंह, सचिव रामेश्वर प्रसाद मंडल, सह सचिव खिरोधर प्रसाद महतो, कोषाध्यक्ष जानकी महतो, आलोक गिरि को बनाया गया।

चिन्मय विद्यालय के 45 मेधावी विद्यार्थी सम्मानित

बोकारो : चिन्मय विद्यालय के नवनिर्मित सभागार में सीबीएसई (पटना) के क्षेत्रीय अधिकारी जगदीश बर्मन ने चिन्मय विद्यालय में 45 मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया। एआईएसएससीई एवं एआईएसएसई 2021-22 में रिजल्ट लाने वाले बच्चे सम्मानित किए गए। उन्हें संबोधित करते हुए श्री बर्मन ने कहा कि यह उनकी सफलता पहली सीढ़ी है। इसे लगातार बनाए रखना उनकी महत्वपूर्ण चुनौती है। चुनौती का समाधान खोजने के लिए सकारात्मक प्रतिस्पर्धा बनाएं रखें। इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्री बर्मन, विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष विश्वरूप मुखोपाध्याय, सचिव महेश त्रिपाठी, कोषाध्यक्ष आरएन मल्लिक एवं प्राचार्य सूरज शर्मा ने मंत्रोच्चारण के साथ दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम का संचालन सुनील कुमार ने किया।

नीतीश सरकारी सुरक्षा से निकलें, तो समझ में आ जाएगा विकास : प्रशांत

बिहार की राजनीति में सक्रिय चुनावी रणनीतिकार ने फिर साधा निशाना, राहुल पर भी कसे तंज

विशेष संवाददाता

पटना : बिहार की राजनीति में सक्रिय होने के बाद चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर एक बार फिर मीडिया के सामने आए और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर तीखा हमला बोला। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार ने बिहार में कोई विकास नहीं किया है। बिहार आज भी पिछड़ा राज्य है। कुर्सी से चिपकने से कुछ नहीं होने वाला है, धरातल पर काम करना होगा। नीतीश कुमार बगैर सरकारी सुरक्षा के निकल जाएं फिर उन्हें विकास समझ में आ जाएगा। नीतीश 10 वर्षों से राजनीतिक बाजीगरी दिखा रहे हैं और कुर्सी से चिपके हुए हैं। प्रशांत किशोर ने बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के दिल्ली दौरे पर सवाल उठाते हुए कहा कि केवल नेताओं से मिलने से राष्ट्रीय राजनीति प्रभावित नहीं होगी।

प्रशांत किशोर ने सीएम नीतीश के दिल्ली दौरे पर सवाल उठाते हुए कहा कि केवल नेताओं से मिलने और साथ चाय पीने से राष्ट्रीय राजनीति नहीं बदलती है। उनके इस कदम से जनता के ऊपर कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है।

प्रशांत ने नीतीश कुमार के बिहार में भाजपा छोड़ने और महागठबंधन में शामिल होने की बात कहते हुए कहा कि यह राज्य आधारित घटना है। इसका अन्य राज्यों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उन्होंने कहा कि पहले महाराष्ट्र में महागठबंधन की सरकार थी, लेकिन वर्तमान में एनडीए की सरकार है लेकिन इसका असर बिहार पर नहीं पड़ा। उन्होंने कहा कि सीएम नीतीश कुमार के दिल्ली दौरे को अनुचित महत्व दिया गया और राष्ट्रीय राजनीति पर इसका प्रभाव न के बराबर होगा।

वहीं, राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा - उन्हें उन राज्यों में यात्रा करनी चाहिए जहां कांग्रेस के सामने भाजपा है। बिहार में अब नीतीश कुमार को जनता के समर्थन से जीत पाना मुश्किल है। नीतीश कुमार के खिलाफ लोगों में गुस्सा है।

'खुशहाल बोकारो' का ग्लोबल कल्चरल सोशल एंबेसडर बनीं सुषमा

बोकारो : खुशहाल बोकारो अभियान केंद्र सेक्टर- 1सी में भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर एनआरआई व बोकारो की बेटी-बहू सुषमा रानी झा को ग्लोबल कल्चरल सोशल एंबेसडर का ताज पहनाया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि झारखंड सरकार के निदेशक, पशुपालन विभाग शशि प्रकाश झा, विशिष्ट अतिथि सीआरपीएफ के सेकेंड इन कमान्डेंट सुनील कुमार राही, बीपीएससीएल के सीईओ की पत्नी सीमा ठाकुर, खुशहाल बोकारो के संस्थापक अमरेंद्र कुमार झा, सखी बहिनपा मैथिलानी समूह के बोकारो एडमिन एवं मिथिला गर्ल्स वर्ल्ड की अमिता झा, मृणालिका की अध्यक्ष उषा प्रसाद, सचिव नीलम सिंह ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया। स्वागत भाषण में खुशहाल बोकारो के संस्थापक अमरेन्द्र झा ने कहा कि बोकारो को पुनः देश के टॉप 5 शहरों में लाने के लिए बोकारो स्टील प्लांट के निदेशक प्रभारी अमरेन्दु प्रकाश द्वारा सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं से सहयोग की अपील के आलोक में खुशहाल बोकारो अभियान चलाया जा रहा है। इस अवसर पर अमेरिका से पहुंचीं सुषमा रानी झा, उनके पति सुप्रसिद्ध गायक अजय झा, बोकारो के प्रसिद्ध गायक अरुण पाठक, उमेश कुमार झा आदि ने इस अवसर पर अपने गायन से समां बांध दिया।

अंग्रेजी ग्रामर की पुस्तक लैटर-1 का लोकार्पण

बोकारो : सिंगियाही रोड स्थित शिक्षांजलि स्कूल के सभागार में अंग्रेजी ग्रामर की पुस्तक लैटर-1 का लोकार्पण एवं कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। पुस्तक के लेखक डॉ. अनिश्वनी कुमार वर्मा हैं। पुस्तक का लोकार्पण पुपरी के वरिष्ठ साहित्यकार एवं अध्यक्ष रामबाबू नीरव, सीतामढ़ी के वरिष्ठ कवि सत्येन्द्र मिश्र, यू. एस. करुणाकर, आचार्य धीरेन्द्र, कवि संजय चौधरी, सुनील झा एवं एसके सुमन के द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. अनिश्वनी कुमार एवं डॉ. नूतन कुमारी थे। मंच संचालन यूएस करुणाकर एवं गौतम कुमार तथा राहुल चौधरी ने संयुक्त रूप से किया। कवि सम्मेलन से पूर्व सभी अतिथियों तथा साहित्यकारों को शिक्षांजलि के निर्देशक सुनील झा द्वारा अंग वस्त्र एवं पाग देकर सम्मानित किया गया। कवि सम्मेलन में विशेष रूप से युवा एवं नवोदित कवियों को मौका देकर उनकी हौसला अफजाई की गयी। कवि सम्मेलन का आगाज नवोदित कवि ईशान गुप्ता ने अपने गजल से किया। भाग लेने वाले कवियों में प्रमुख थे - गौतम कु० वात्स्यायन, सत्येन्द्र मिश्र, आचार्य धीरेन्द्र, हास्य कवि प्रकाश मोहन मिश्रा, राहुल चौधरी, स्वतंत्र शांडिल्य, कुमारी स्मृतिका, कुमार मनदीप, यूएस करुणाकर, शत्रु मर्दन 'दीपक', रामबाबू नीरव आदि शामिल रहे।

अपना कार्यकाल पूरा करेगी हेमंत सरकार : आमलगीर

संवाददाता

बोकारो : झारखंड सरकार के राज्य के ग्रामीण विकास मंत्री आलमगीर आलम ने कहा कि राज्य सरकार काफी बेहतर काम कर रही है। सरकार के काम का परिणाम है कि अब तक जो भी उप चुनाव राज्य में हुए उसमें यूपीए को ही जीत हासिल हुई है। ऐसे में सरकार पूरी मजबूती के साथ काम कर रही है। जो भी अटकले सरकार को लेकर लगाई गई थी।

वह सदन में बहुमत साबित होने के बाद साफ हो गया है। सरकार अपना कार्यकाल पूरा करेगी। पिछले दिनों धनबाद जाने के क्रम में बोकारो के नया मोड़ में पत्रकारों से

बातचीत में मंत्री ने ये बातें कहीं। उन्होंने कहा कि राज्य की जनता ने पांच वर्षो के लिए जनादेश दिया है। जनता की हर आकांक्षा को पूरा करते हुए उसके अनुरुप विकास के काम हो रहें है। राज्य सरकार के कर्मियों को पुरानी पेंशन स्कीम का लाभ का मामला हो या फिर पुलिस कर्मियों के पुराने मांग, सभी को पूरा किया गया। इसके अलावे राज्य में हर आम लोगों तक सरकार की योजनाओं का लाभ मिले। इसे सुनिश्चित करते हुए काम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सदन में जिस तरह राज्य के पूर्व मंत्री सरयू राय ने राज्य के मंत्री पर टिप्पणी की है। इस तरह के व्यक्तिगत टिप्पणी किसी पर नहीं करनी चाहिए। वहीं राज्य में जो भी आपराधिक घटनाएं हो रही हैं, उनमें शामिल सभी अपराधियों को सरकार जेल भेजेगी।

शिक्षक सफल राष्ट्र के निर्माता : डॉ. रामनरेश

मुजफ्फरपुर : साईं बाबा कॉलेज ऑफ एजुकेशन में शिक्षक दिवस मनाया गया। इस अवसर पर डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए उनकी जीवनी व उनके अवदानों पर चर्चा की गई। प्राचार्य डॉ. रामनरेश झा ने कहा कि शिक्षक ही एक सफल राष्ट्र के निर्माता होते हैं। शिक्षक ही सशक्त समाज व राष्ट्र के निर्माण की आधारशिला हैं।

हिन्दू धर्म का सुरभित पुष्प है श्राद्ध पक्ष

- गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली -

श्राद्ध पक्ष- 10 सितम्बर से 25 सितम्बर, 2022

श्राद्ध पक्ष हिन्दू धर्म का एक अत्यंत ही सुरभित पुष्प है।

श्राद्ध पक्ष में हमें जीवन प्रदान करने वाले हमारे वंशजों के प्रति कृतज्ञता की भावना स्पष्ट परिलक्षित होती है। हिन्दू धर्म में केवल जीवित माता-पिता की ही नहीं, अपितु देव गमन हो गए हमारे परिवार जनों के प्रति भी श्रद्धा अर्पित करने का महत्व है। मरणोत्तर क्रियाओं-संस्कारों का वर्णन हमारे शास्त्रों-पुराणों में आता है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण है श्राद्ध।

श्राद्ध की महिमा का वर्णन विष्णु, वायु, वराह, मत्स्य आदि पुराणों एवं महाभारत, रामायण के शास्त्रों में आया है। श्राद्ध पक्ष पितृ-ऋण से उऋण होने का काल है। श्राद्ध-क्रिया द्वारा पितृ-ऋण से मुक्त हुआ जाता है। सूर्य कन्या राशि में प्रवेश करता है। इस दिन हमारे पितृ यमलोक से अपना निवास छोड़कर सूक्ष्म रूप से मृत्यु लोक में अपने वंशजों के निवास स्थान में रहते हैं। अतः उस दिन उनके लिए विभिन्न श्राद्ध करने से वे तृप्त होते हैं।

महाभारत के युद्ध में दुर्योधन का विश्वासपात्र मित्र कर्ण देह छोड़कर ऊर्ध्वलोक में गया और वीरोचित गति को प्राप्त हुआ। मृत्यु लोक में वह दान करने के लिए प्रसिद्ध था। उसका पुण्य कई गुना बढ़ चुका था और दान स्वर्ण, रजत के ढेर के रूप में उसके सामने आया। कर्ण ने धन का दान तो किया था, किंतु अन्न-दान की उपेक्षा की थी। अतः उसे धन तो बहुत मिला, किंतु क्षुधा तृप्ति की कोई सामग्री उसे नहीं दी गई। कर्ण ने यमराज से प्रार्थना की तो यमराज ने उसे 15 दिनों के लिए पृथ्वी पर जाने की सहमति दे दी। पृथ्वी पर आकर पहले उसने अन्न दान किया। अन्नदान की जो उपेक्षा की थी, उसका बदला चुकाने के लिए 15 दिन तक साधु-संतों, गरीबों, ब्राह्मणों को अन्न, जल से तृप्त किया और श्राद्ध विधि भी की।

जब वह ऊर्ध्वलोक में लौटा, तब उसे सभी प्रकार की खाद्य सामग्रियां ससम्मान दी गईं। धर्मराज यम ने वरदान दिया कि इस समय जो मृत आत्माओं के निमित्त जल आदि तर्पण करेगा, अथवा जल अंजलि देगा तो वह भी उन तक पहुंचेगी। जिनकी मरण तिथि ज्ञात न हो, उनके लिए भी इस अवधि के दौरान दी गई अंजलि पहुंचती है।

जिस तिथि को श्राद्ध करना हो, उस तिथि पर विशेष श्रद्धा पूर्वक स्मरण, जप, ध्यान आदि करके अंतःकरण पवित्र रखना चाहिए। जिनका श्राद्ध किया जाए, उन माता-पिता, पति-पत्नी, संबंधी आदि का स्मरण करके उन्हें याद दिलाएं कि आप देह नहीं हो, आपकी देह तो समाप्त हो चुकी है, किंतु आप विद्यमान हो, आप आत्मा हो..., शाश्वत हो..., चैतन्य हो...। अपने शाश्वत रूप को निहार कर, हे पितृ आत्माओं! आप भी मय हो जाओ।

हे पितृ आत्माओं! आकपो हमारा प्रणाम है। हम भी नश्वर देह के मोह से सावधान होकर अपने शाश्वत, परमात्म-स्वभाव में जल्दी जागें..., परमात्मा एवं परमात्म-प्राप्त महापुरुषों के आशीर्वाद आप हम पर बरसाते रहें।

सूक्ष्म जगत के लोगों को हमारी श्रद्धा और श्रद्धा से दी गई वस्तु से तृप्ति का एहसास होता है। बदले में वे हमें मदद करते हैं, प्रेरणा देते हैं, प्रकाश देते हैं, आनंद और शांति प्रदान करते हैं।

शास्त्रों के अनुसार जो श्रद्धा से दिया जाए, उसे श्राद्ध कहते हैं। श्रद्धा के साथ मंत्र जप से ही श्राद्ध संपन्न हो सकता है। जीवात्मा का अगला जीवन पिछले संस्कारों से बनता है। अतः श्राद्ध अर्पित करेगा, उसकी अंजलि मृत आत्मा जहां भी होगी, वहां तक अवश्य पहुंचेगी। जो निःसंतान ही चल बसे हैं, उन मृत आत्माओं के लिए भी यदि कोई व्यक्ति इन दिनों श्राद्ध, करके यह भावना की जाती है कि उसका अगला जीवन परमात्मा अच्छा हो। जिन पितरों के प्रति हम कृतज्ञता पूर्वक श्राद्ध करते हैं, वे हमारी सहायता करते हैं।

'वायु पुराण' में वर्णन है कि जो मनुष्य श्रद्धा के साथ श्राद्ध कर्म करेंगे, उन्हें पितृ गण सर्वदा पुष्टि एवं संतति देंगे। श्राद्ध कर्म में अपने प्रपितामह तक के नाम एवं गोत्र का उच्चारण कर जिन पितरों को कुछ दे दिया जाएगा, वे पितृगण उस श्राद्ध-दान से अति संतुष्ट होकर देने वाले की संततियों को संतुष्ट रखेंगे, शुभ आशीष तथा विशेष सहाय देंगे। हे ऋषियों! उन्हीं पितरों की कृपा से दान, अध्ययन, तपस्या आदि सबसे सिद्धि प्राप्त होती है।

हमारे पूर्वजों ने अर्थात माता-पिता, दादा-दादी आदि ने क्या-क्या कार्य किए, इसका लेखा-जोखा और निर्णय करने का अधिकार हमें नहीं है। हमारे पूर्वज हमारे लिए धन-संपदा छोड़कर गए, अथवा कर्ज छोड़कर गए, इस आधार पर भी उनका लेखा-जोखा नहीं किया जा सकता। हमारे पूर्वजों ने वंश-परंपरा को चलाया और उनके कारण इस संसार में हमारा जन्म हुआ, यह उनका सबसे बड़ा एहसान है।

जन्म गरीबी में हुआ, अथवा अमीरी में, यह महत्वपूर्ण नहीं है। आपका जन्म हुआ, जीवन प्राप्त हुआ, यह महत्वपूर्ण है। इसलिए जीवन में माता-पिता को प्रेम और उनके लोक छोड़ जाने के पश्चात श्रद्धा का भाव व्यक्त किया जाता है और अपने पूर्वजों का सम्मान करने का सबसे उत्तम तरीका उन्हें नियमित श्रद्धांजलि देना ही है।

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ) - स्वास्थ्य में अनुकूलता आएगी। अपनी जिद को नियंत्रित रखें। वाणी पर संयम रखें। शत्रुओं में कमी आएगी। पारिवारिक सुख में कमी हो सकती है। कार्यों में थोड़े विलम्ब हो सकते हैं।

वृष (ई उ ए ओ वा वी वू वे वो) - स्वास्थ्य पर वात का प्रभाव पड़ सकता है। उच्चाधिकारियों के सहयोग में कमी हो सकती है। कार्यों की सफलता में देर होगी। दाम्पत्य जीवन मे प्रेम-सौहार्द बनाकर रखें।

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा) - स्वास्थ्य अनुकूल रहेंगे। वाणी पर संयम रखें। शिक्षा के क्षेत्र में सफलता के योग बनेंगे। उच्च अधिकारियों से सहयोग प्राप्त होंगे। चल-अचल संपत्ति में बढ़ोतरी होंगे। संतान की तरफ से अच्छे संदेश प्राप्त होंगे।

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो) - स्वास्थ्य में सुधार होंगे। क्रोध पर संयम रखें। धार्मिक कार्यों की तरफ झुकाव बढ़ेंगे। शत्रु कमजोर होंगे। पारिवारिक जीवन मे थोड़े मतभेद हो सकते हैं। सप्ताह के मध्य में भाग्योदय की वृद्धि होगी।

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे) - स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। वाणी से लाभ प्राप्त हो सकते है। मन प्रसन्न रहेगा। शत्रुओं पर विजय होगी। खर्चे में वृद्धि होगी। मन में चंचलता रहेगी। भय का माहौल हो सकता है।

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो) - स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। कुटुम्बों से रिश्ते सुधर सकते हैं। तीर्थाटन के योग बनेंगे। धनागम या लाभ होगा। सुख में वृद्धि हो सकती है। सन्तान पक्ष से उम्मीद बढ़ेगी।

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते) - स्वास्थ्य पर मौसम के प्रभाव पड़ सकते हैं। सुख में थोड़ी कमी रहेगी। धन की प्राप्ति के योग बनेंगे। कार्य परिवर्तन का मन बना सकते हैं। लाभ कम प्रभावी होगा।

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो या यी यू) - स्थान परिवर्तन के योग बन सकते हैं। वाणी शुद्ध रखें। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगा। धार्मिक कार्यों में दान देने का अवसर प्राप्त होगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। राज्याधिकारियों से लाभ प्राप्त हो सकता है।

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे) - स्वास्थ्य लाभ। वाणी एवं क्रोध पर संयम रखने की जरूरत है। लाभ प्राप्त के योग बन सकते हैं। भाग्योदय में वृद्धि होगी। उच्चाधिकारियों से लाभ प्राप्त अर्थात प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी) - स्वास्थ्य अच्छा होगा। समय की अनुकूलता आएगी। पारिवारिक रिश्तों पर ध्यान रखें। यात्रा के योग बनेंगे। मित्रों से सहायता मिलेगी। समस्त कार्यों में नजदीकियों के सहयोग प्राप्त होंगे।

कुम्भ (गू गे गो सा सी सू से सो दा) - स्वास्थ्य में अनुकूलता आएगी। शत्रुओं में बढ़ोतरी होगी। लाभ योग बनेंगे। पारिवारिक जीवन मे सुख की बढ़ोतरी होगी। लाभ प्राप्त करने का समय चल रहा है। अनावश्यक यात्रा के योग बन सकते हैं।

मीन (दी दू थ झ दे दो चा ची) - मौसम के परिवर्तन से स्वास्थ्य पर बुरे प्रभाव पड़ सकते हैं। सन्तान पक्ष की चिंता बढ़ सकती है। क्रोध पर संयम रखें। कार्य क्षेत्र में दबाव बढ़ेंगे। वाणी पर संयम रखें।

अधिक जानकारी के लिए
संपर्क करें- 7808820251

श्राद्ध और तर्पण का शास्त्रीय एवं लौकिक महत्व

ज्योतिषीय विश्लेषण

- बी. कृष्णा नारायण

पितरः प्रीति मापन्ने सर्वाम प्रीयन्ति देवता।

अर्थात् पितर के प्रीत से ही देवता प्रसन्न होते हैं। जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे, आर्यावर्ते, पुण्य क्षेत्रे (अपने नगर/गांव का नाम लें) श्वेतवाराहकल्पे, वैवस्वतमन्वन्तरे, उत्तरायणे बसंत ऋतो महामंगल्यप्रदे मासानां मासोत्तमे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे , अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं (अपने गोत्र का नाम लें), अमुकनामा (अपना नाम लें) सकलपापक्षयपूर्वकं सर्वारिष्ट शांतिनिमित्तं सर्वमंगलकामनया- श्रुतिस्मृत्योक्तफलप्राप्त्यर्थं मनेप्सित कार्य सिद्धयर्थं ... च अहं पूजन करिष्ये। तत्पूवार्गत्वेन निर्विघ्नतापूर्वक कार्य सिद्धयर्थं यथामिलितोपचारे... पूजनं करिष्ये।

किसी भी शुभ संकल्प से पहले जब पंडित जी यह मन्त्र बोलते थे तब हमारा ध्यान बरबस ही इस ओर जाता था। जब मैंने बाबूजी से इसके बारे में पूछा तब उन्होंने विस्तार से इसके बारे में बताया और न केवल मेरी शंका का शमन किया, अपितु अपने पूर्वजों से भी मिलवाया। इस मंत्र में अन्य बातों के साथ जब हम अपना गोत्र जोड़ते हैं तो अपने पितरों के साथ तो हम अपना सम्बन्ध स्थापित करते ही हैं साथ ही साथ हम कौन हैं इसकी पहचान भी होती है।

श्राद्ध - अपने पितरों से मिलने का समय, उनसे मिलकर एकाकार होने का समय, उनके प्रति श्रद्धाभाव से समर्पित होने का समय है।

श्रद्धां दीयते, श्रद्धां क्रियते, श्रद्धां अनुदीयते श्राद्धें श्राद्धेषु पितरं तृप्तः।

श्राद्ध को लेकर शास्त्रीय कथन क्या है? इसके पीछे का वैज्ञानिक रहस्य क्या है? तर्पण की विधि क्या है? और कौओं को खाना खिलाये जाने के पीछे का रहस्य क्या है, इन सभी बातों को हमलोग जानेंगें।

भगवद्गीता -

संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च।
पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः॥1 /42॥

लुप्तपिण्डोदकक्रियाः - समाज में जब तर्पण लुप्त हो जाता है मतलब कि अपने पूर्वजों के प्रति जो श्रद्धा है उस श्रद्धा से समाज विमुख हो जाता है तो समाज का ह्रास शुरू हो जाता है। समाज कि अवनति आरम्भ हो जाती है।

अपने से बड़ों को सम्मान देना, अपने वरिष्ठों को मान देना यह धर्म पालन का एक महत्वपूर्ण अंग है। श्राद्ध और तर्पण, इस एक प्रक्रिया से पूरा का पूरा धर्म जीवित है। मत्स्य पुराण मैं पिण्डोदक कर्म का विस्तार से वर्णन किया गया है। छान्दोग्य उपनिषद में भी इस कर्म का वर्णन है। मार्कण्डेय पुराण में ऋतुध्वज अपनी पत्नी मदालसा को कहते हैं कि पुत्रों को प्रवृत्ति मार्ग में लगाओ। ऐसा करने से कर्म मार्ग का उच्छेद नहीं होगा तथा पितरों के पिंडदान का लोप नहीं होगा। जो पितर देवलोक में हैं, तिर्यक योनि में जो परे हैं, वे पुण्यात्मा हो या पापात्मा, जब भूख, प्यास से विकल होते हैं तो अपने कर्मों में लगा हुआ मनुष्य पिंडदान द्वारा उन्हें तृप्त करता है। तब मदालसा अपने पुत्र अलर्क को श्राद्ध कर्म के बारे में बतलाते हुए कहती हैं कि मृत्यु के पश्चात् जो श्राद्ध किया जाता है उसे औरघवदैहिक श्राद्ध कहते हैं। व्यक्ति जिस दिन (तिथि में) मरा हो ,उस तिथि को एकोदिष्ट श्राद्ध करना चाहिऐ एक ही पवित्रक का उपयोग किया जाता है। अग्निकरण की क्रिया नहीं होती।

ब्राह्मण के उच्छिष्ट के समीप प्रेत को तिल और जल के साथ अपसव्य होकर (जनेऊ को दाहिने कंधे पर डालकर)उसके नाम गोत्र का स्मरण करते हुए एक पिंड देना चाहिए। तत्पश्चात हाथ में जल लेकर कहें - 'अमुक के श्राद्ध में दिया हुआ अन्न-पान आदि अक्षय हो यह कहकर वह जल पिंड पर छोड़ दें, फिर ब्राह्मणो का विसर्जन करते समय कहे 'अभिरंबताम' (आपलोग सब तरह से प्रसन्न हों)। उस समय ब्राह्मण लोग कहें 'अभिरता स्मः' (हम भली भांति संतुष्ट हैं)।

श्राद्ध में विषम संख्या में ब्राह्मणों को आमंत्रित करें। पिता, पितामह और प्रपितामह, इन तीनों पुरुषों को पिंड का अधिकारी समझना चाहिए। यही बात मातामहों के श्राद्ध में भी होना चाहिए। पितृश्राद्ध में बैठे हुए सभी ब्राह्मणों को आसन के लिए दोहरे मुड़े हुए कुश देकर उनकी आज्ञा लें। विद्वान पुरुष मन्त्रोच्चारपूर्वक पितरों का आवाहन करें और अपसव्य होकर पितरों की प्रसन्नता के लिए तत्पर हो उन्हें अर्घ्य निवेदन करें। इसमें जौ के स्थान पर तिल का प्रयोग करना चाहिए।

नमक से रहित अन्न लेकर विधिपूर्वक अग्नि में आहुति दें। 'अग्नये कव्यवाहनाये स्वाहा ' इस मन्त्र से पहली आहुति दें, 'सोमाय पितृमते स्वाहा' इस मंत्र से दूसरी आहुति दें तथा 'यमाये प्रेत्पतये स्वाहा' इस मंत्र से तीसरी आहुति दें। आहुति से बचे हुए अन्न को ब्राह्मणों के पात्र में परोसें। फिर विधिपूर्वक जो जो अन्न उन्हें अत्यंत प्रिय लगे, वह उनके सामने खुशीपूर्वक प्रस्तुत करें।

यहां सिर्फ पितरों के तृप्त और सुखी होने की कामना नहीं

की जाती है बल्कि देव, ऋषि, दसों दिशाएं, ऋतु और यहाँ तक कि यम के तृप्त और सुखी होने की कामना से उन्हें जल दिया जाता है। सर्वे भवन्तु सुखिनः और श्रद्धा भाव दो मूल मन्त्र पकड़ता है हमें श्राद्ध। ब्राह्मणों को आग्रहपूर्वक भोजन कराएं। उनके भोजनकाल में रक्षा के लिए पृथ्वी पर तिल और सरसों बिखेर दे और रक्षोग्न मन्त्र का पाठ करें, क्योंकि श्राद्ध में अनेक प्रकार के विघ्न उपस्थित होते हैं।

अंत में यथाशक्ति दान देकर ब्राह्मणों से कहें 'सुस्वधा अस्तु' (यह श्राद्धकर्म भली भांति संपन्न हो) ब्राह्मण भी संतुष्ट होकर कहें 'तथास्तु' इसके बाद उनका आशीर्वाद लें और उन्हें विदा करें। तत्पश्चात अथितियों को भोजन कराऐं इसके बाद बचा हुआ भोजन यजमान ग्रहण करें। जो वंशज अपने पितरों को तर्पण और श्राद्ध द्वारा तृप्त करते हैं, पितर उनकी सब प्रकार से रक्षा करते हैं।

भाद्रपद (भादो माह) में मनाये जाने वाले श्राद्ध का वैज्ञानिक आधार - ज्योतिषशास्त्र के अनुसार, सूर्य का कन्या राशि में जब गोचर हो रहा होता है या सूर्य कन्या राशि में प्रवेश करने वाला होता है तब श्राद्धकर्म किया जाता है। इसे पितृपक्ष कहते हैं। सारे व्रत और त्योहार सूर्य और चन्द्रमा के परस्पर संबंधों पर आधारित हैं, पर यह सिर्फ सूर्य पर आधारित है। ज्योतिष्शास्त्र ने हजारों वर्ष पूर्व सूर्य के कन्या राशि में गोचर के साथ पितरों की चर्चा की। यह विज्ञान सम्मत भी है। कैसे, आइये जानें - पृथ्वी और अन्य ग्रह सूर्य के चारों तरफ चक्कर लगाते हैं। सूर्य आकाशगंगा के चारों तरफ घूमता है और कई आकाशगंगाओं का समूह जिस तारामंडल के चारो तरफ घूमते हैं, उस तारामंडल की गति दिशा कन्या राशि की तरफ होती है, इसे विज्ञान VIRGO (कन्या) super cluster कहता है।

रांची में अभी भी आदिवासी जाति हैं, जो हर तीसरे वर्ष अपने पितरों को तृप्त करने हेतु पूजा करते हैं। वे जिस समय पूजा करते हैं सूर्य कन्या राशि में आ चुका होता है। है न आश्चर्य की बात कि आज विज्ञान जिस बात को स्वीकार रहा है, ज्योतिषशास्त्र हजारों वर्ष पूर्व ही उसका दर्शन करा चुका है। उन्होंने इस मार्ग को पितृमार्ग कहा। इसका सारगर्भित अर्थ यह कि पितृमार्ग अर्थात जनम-मरण-जनम-का चक्रा

कौओं को खाना खिलाने के पीछे का सारगर्भित अर्थ - लोक, आस्था, प्रकृति और जीवन से जोड़ है यह। पीपल के बीज को कौए जब खाकर मल द्वारा बाहर निकालते हैं तभी पीपल के बीज से पौधा निकल पाता है। लोग जब कौओं के माध्यम से पितरों से जुड़ते हैं तो पता चलता है कि इसका भी कितना महात्म्य है और यह ज्ञान हमें किताबों से नहीं मिलता वरन प्रकृति से जुड़कर मिलता है।

सो, आइये हम अपनी पहचान के प्रति सचेत हों और सनातन परंपरा के बीज को फिर से पोषित करें। तर्पण करें। अपने पितरों का आशीर्वाद प्राप्त कर ग्रहजन्य पीड़ा एवं पितृदोष से मुक्ति पाकर आधिदैविक, अधिभौतिक और आध्यात्मिक उन्नति को प्राप्त करें। पितरों के प्रति अपनी श्रद्धा सुमन श्राद्ध के रूप में अर्पित करें।

नीट 2022 में 'ऑरेंज इंस्टीट्यूट' का फिर दबदबा

29 विद्यार्थियों ने पाई कामयाबी

कार्यालय संवाददाता

बोकारो : मेडिकल संस्थानों में प्रवेश के लिए राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट) यूजी 2022 में बोकारो के प्रमुख शैक्षणिक संस्थान ऑरेंज इंस्टीट्यूट का दबदबा इस बार भी बरकरार रहा। संस्थान में अध्ययनरत कुल 29 विद्यार्थियों ने शानदार सफलता अर्जित कर अपने इंस्टीट्यूट और बोकारो शहर का नाम रोशन किया है। प्रथम स्थान पर हिमांशु (जनरल) रहे, जिन्हें 690 अंक मिले। इसके अलावा चन्दन कुमार 672 (ओबीसी), अंशुमन सिंह 665 (ओबीसी), मनन 655 (ओबीसी), संजना 643 (ओबीसी), रंजन कुमार 641 (जनरल), अंश कुमार वर्मा 629 (जनरल), कल्पना 612

(जनरल), शिवम 612 (ओबीसी), रिशु राज 603 (ओबीसी), अभय 602 (ओबीसी), हर्षल 601 (ओबीसी), संगीता रानी 600 (ओबीसी), अंजना कुमारी 592 (ओबीसी), अभिजीत 584 (ओबीसी), साक्षी 574 (ओबीसी), सयाली 570 (ओबीसी), प्रथम 567 (ओबीसी), राधिका 560 (ओबीसी), अंजलि 530 (एससी), प्रांजल 529 (ओबीसी) , मिशा भारती 522 (ओबीसी), सुधांशु 512 (एससी), मृणाल भारती 510 (एससी), महिमा 502 (एससी), आदित्य 488 (एससी), प्रियांशु 430 (एससी), शिवम दास 403 (एससी), संदीप मुर्मू 339 (एसटी) आदि छात्रों ने भी शानदार सफलता पाई है। सफल विद्यार्थियों ने इसका श्रेय ऑरेंज इंस्टीट्यूट के शिक्षकों को दिया है।

मेडिकल की तैयारी का बेहतर विकल्प बना ऑरेंज इंस्टीट्यूट : कमलेश

ऑरेंज इंस्टिट्यूट के डायरेक्टर कमलेश सिंह, सीईओ एमके झा, एकेडमिक हेड कुमोद मिश्रा एवं सेंटर हेड प्रवीण सिंह ने सभी छात्रों को बधाई देते हुए उनकी कड़ी मेहनत की खूब सराहना की। निदेशक कमलेश सिंह व सीईओ श्री झा ने सफल छात्रों को उनके उज्जवल भविष्य के लिए कामना की। कहा कि हम जैसा चाहते थे छात्रों ने वैसा ही परिश्रम किया और सारी गाइडलाइंस का ईमानदारी से पालन किया। यहां कक्षा 9वीं से लेकर 12वीं पास तक के विद्यार्थी पढाई करते हैं। अभी कक्षा 11वीं और 12वीं पास विद्यार्थियों का नामांकन शुरू है। उन्होंने कहा कि पूरे झारखंड बिहार और बंगाल में नीट की तैयारी करने वाले छात्रों के लिए ऑरेंज इंस्टीट्यूट एक बेहतरीन विकल्प बन चुका है।

पेज- एक का शेष

अब आवाज से...

टेस्ट कराना ज्यादा खर्चीला है, उन देशों को काफी सहूलियत होगी। एप से संबंधित रिसर्च को स्पेन के बार्सिलोना में यूरोपियन रेसपारेटरी सोसाइटी इंटरनेशनल कांग्रेस में पेश किया गया है। शोधकर्ताओं के मुताबिक आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस मॉडल पर आधारित यह एप 89 प्रतिशत समय में सटीक होता है। एप में सिंपल वॉयस रिकॉर्डिंग को दर्ज कर लिया जाता है और एआई गणितीय गणना के आधार पर ये सटीक परिणाम बता देता है। शोधकर्ताओं ने बताया कि कोविड-19 संक्रमण आम तौर पर श्वसन नली और स्वर यंत्र यानी वोकल कॉर्ड को प्रभावित करता है। इससे संक्रमित व्यक्ति की आवाज में परिवर्तन होता है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस इसी का पता लगाकर तुरंत इसका टेस्ट कर सकती है। (संवाद सूत्र)

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा दामिनी प्रिन्टर्स, जेब्री.- 12, सिटी सेन्टर, सेक्टर-4, बोकारो से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **श्रवण कुमार झा,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई.पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)

Postal Reg. No.- DNB- 072/2021-23

कर्तव्य पथ : लोकतांत्रिक अतीत और सर्वकालिक आदर्शों का जीवंत पथ

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : इंडिया गेट और आसपास के इलाके का अब कायाकल्प हो चुका है। राजपथ अब कर्तव्य पथ हो चुका है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बीते हफ्ते गुरुवार को इंडिया गेट पर'कर्तव्य पथ' का उद्घाटन किया। इससे पहले उन्होंने यहां नेताजी सुभाष चंद्र बोस की ग्रेनाइट से निर्मित 28 फुट की प्रतिमा का अनावरण भी किया। प्रधानमंत्री ने इंडिया गेट पर कर्तव्य पथ के पुनर्विकास से जुड़ी प्रदर्शनी का अवलोकन किया। इससे पहले उन्होंने सेंट्रल विस्टा एवेन्यू के पुनर्विकास कार्य में शामिल श्रमजीवियों से बातचीत की। सरकार के अनुसार सत्ता के प्रतीक राजपथ का नाम बदलकर कर्तव्य पथ करना जन प्रभुत्व और सशक्तिकरण का एक उदाहरण है। कर्तव्यपथ के निर्माण में शामिल श्रमजीवियों के साथ बातचीत करते हुए प्रधानमंत्री ने राष्ट्र के लिए उनके प्रयासों और योगदान की चर्चा की। उनके प्रति आभार व्यक्त करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा, 'कर्तव्य पथ केवल ईंटों और पत्थरों का मार्ग नहीं है। यह भारत के लोकतांत्रिक अतीत और सर्वकालिक आदर्शों का जीवंत पथ है।'

522 करोड़ रुपए के खर्च से कठिन समयसीमा में काम पूरा

पीआईबी सूत्रों के अनुसार कर्तव्य-पथ का कायाकल्प और पुनर्विकास का कार्य करने वाली एजेंसी केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग ने बेहद कठिन समय सीमा के भीतर चुनौतीपूर्ण कार्य को अंजाम दिया। कर्तव्य पथ का काम मार्च, 2021 में शुरू हुआ था और इसका पहला चरण 26 जनवरी, 2022 को गणतंत्र दिवस परेड के लिए समय पर पूरा हुआ। परियोजना की स्वीकृत लागत 608 करोड़ रुपए है और चरण- 1 पूरा हो जाने के साथ अब तक 522 करोड़ रुपए खर्च हो चुके हैं। ग्रेनाइट से बने पैदल मार्ग की कुल लंबाई 16.5 किमी है। 300 सीसीटीवी कैमरों, बैठने के लिए पत्थर से बने 422 बेंचों, अनेक ट्विन स्टोन डस्टबिनों, सेवाओं के लिए लगभग 165 किमी भूमिगत पाइपलाइनों और भारी वर्षा के पानी को निकालने के लिए 10 किमी

लंबी भूमिगत नालियों के साथ, केन्द्रीय मार्ग का पूरी तरह से नवीनीकरण किया गया है, उसे सुदृढ़ के साथ प्राकृतिक दृश्य बहाल किया गया है।

अब पहले से ज्यादा अनुकूल सुविधाएं

कर्तव्य पथ को पैदल यात्रियों और यातायात के मार्गनिर्देशन के लिए अधिक अनुकूल बना दिया गया है। इसमें 8 मीटर चौड़े कुल चार पैदल अंडरपास-जनपथ और सी-हेक्सागन जंक्शनों पर प्रत्येक में दो- पैदल यात्रियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए प्रदान किए गए हैं। आठ भूमिगत सार्वजनिक सुविधा ब्लॉक और छह वेंडिंग प्लाजा को मौजूदा पेड़ों को

90 एकड़ में दोबारा विकसित किए गए घास के मैदान

इसके अलावा, कर्तव्य पथ के नजदीक घास के मैदानों का नवीनीकरण किया गया है और अधिकांश जामुन के पेड़ों को बरकरार रखा गया है और वृक्षारोपण की योजनाबद्ध रणनीति के माध्यम से अधिक पेड़ लगाए गए हैं। कुल 90 एकड़ क्षेत्र में घास के मैदान दोबारा विकसित किए गए हैं। कर्तव्य पथ के वास्तुकला चरित्र के अनुसार, ऐतिहासिक चेन सम्पर्क और कर्तव्य पथ पर लगे 79 प्रकाश खंभों को संरक्षित और बहाल किया गया है और 58 नए खंभे जोड़े गए हैं। इसके अलावा, प्राकृतिक दृश्य के साथ सुसंगतता बनाए रखने के लिए बलुआ पत्थर के बोलार्ड का स्थान पेंट किए हुए कंक्रीट बोलार्ड ने ले लिया है। सीपीडब्ल्यूडी ने रिसाव को रोकने के लिए नहरों का नवीनीकरण किया है और इसके अतिरिक्त, नहरों में साफ पानी सुनिश्चित करने के लिए 60 एरेटर और 28 फिल्टरेशन टैंक लगाए गए हैं।

ध्यान में रखते हुए, नागरिक उपयोगकर्ताओं और पर्यटकों के लिए आरामदायक बनाने के लिए सोच-समझकर डिजाइन किया गया है। चरण- 1 में 580 कारों और 35 बसों को खड़ा करने के लिए पार्किंग को डिजाइन किया गया है। कर्तव्य पथ के किनारों पर फुटपाथ, जो पहले बजरी/मुर्रम के हुआ करते थे, उनका स्थान ग्रेनाइट पैदल मार्ग ने ले लिया है। नहर से परे जिन क्षेत्रों में पहले पहुंचा नहीं जा सकता था उन्हें पैदल मार्ग और 16 स्थायी पुल बनाकर पहुंचने के लिए सुलभ किया गया है। आयोजन के दौरान, केन्द्रीय आवास और शहरी कार्य मंत्री हरदीप सिंह पुरी, केन्द्रीय संस्कृति मंत्री जी. किशन रेड्डी, आवास और शहरी कार्य राज्य मंत्री कौशल किशोर, संस्कृति राज्य मंत्री अर्जुन राम मेघवाल, संस्कृति राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी, आवास और शहरी कार्य मंत्रालय में सचिव मनोज जोशी, संस्कृति मंत्रालय में सचिव गोविंद मोहन, सीपीडब्ल्यूडी के महानिदेशक शैलेंद्र शर्मा, विभिन्न विशिष्ट गणमान्य व्यक्ति और सीपीडब्ल्यूडी, एमओएचयूए और संस्कृति मंत्रालय के अधिकारी और कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।